सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी की अनमोल सीख (खण्ड २)

आचरण एवं सूक्ष्म आयाम से सिखाना

(सीख से साधकों को हुए लाभ भी अन्तर्भूत !)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सह-संकलनकर्ता

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातन के ग्रन्थों की भारत की भाषाओं के अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

मई २०२४ तक ३६५ ग्रन्थों की १३ भाषाओं में ९६ लाख ६९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी के आध्यात्मिक शोधकार्य का संक्षिप्त परिचय

१. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' के विषय में मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालन के कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओं का वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियों की पीडाओं की उपचार-पद्धतियों के विषय में शोध

४. १५.५.२०२४ तक २ बालक-सन्तों को, तथा ६० प्रतिशत से अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २३० और अन्य ९२५ दैवी बालकों को समाज से परिचित करवाया । दैवी बालकों के विषय में शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की) देह तथा उपयोग की वस्तुओं में हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोग का शोधकार्य की दृष्टि से अध्ययन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशीजी का परिचय

सनातन की ग्रन्थ-रचना की सेवा करने के साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री के (उदा. सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात' में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

ग्रन्थ की अनुक्रमणिका

(अध्यायों के विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

अध्याय १ : सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का आचरण से सिखाना ११

१ अ. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी द्वारा माता-पिता की आदर्श सेवा कर साधकों में मातृ-पितृ सेवा का बीज बोना ११

१ इ. साधकों को दैनिक जीवन से सम्बन्धित कृतियों से सिखाना १३

* साधकों को आश्रम की दैनिक व मासिक स्वच्छता करने हेतु अनुशासित करना एवं स्वयं भी उसमें सम्मिलित होना १५

१ ई. धर्माचरण एवं अध्यात्म की श्रेष्ठता ध्यान में लाना १७

१ उ. स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन के सम्बन्ध में सिखाना १९

१ ऊ. साधकों को व्यष्टि गुण बढाने के सम्बन्ध में सिखाना २०

* स्वावलम्बन * व्यवस्थितता * मितव्ययिता २०

* समय-पालन * समय का पूर्ण उपयोग * सेवाभाव २९

* गुरु, गुरुपत्नी, संत एवं श्री शंकराचार्यजी के प्रति उत्कट भाव ३६

* अहंशून्यता * 'सब ईश्वेच्छा से होता है', ऐसी दृढ श्रद्धा ४०

* साक्षीभाव ४५

१ ए. साधकों को समष्टि गुण बढाने के विषय में सिखाना ४५

* अन्यों का विचार करना * धर्मकार्य की लगन ४५

१ ऐ. शिष्यत्व के विषय में सिखाना – डॉ. आठवलेजी गुरु के पास अध्यात्म सीखने जाते थे इसलिए गुरु से व्यावहारिक बातों के विषय में कुछ न पूछना ६०

१ ओ. सेवाएं सिखाना ६१

१ औ. साधक आत्मरक्षा (स्वरक्षा) प्रशिक्षण का महत्त्व समझें इसके लिए प्रशिक्षण के कुछ प्रकार स्वयं करना ६१

१ अं. 'आपातकाल का सामना करने की तैयारी करना सिखाना ६२

अध्याय २ : सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को सूक्ष्म आयाम से सिखाना ६३

२ इ. साधकों को स्वभावदोष व अहं निर्मूलन संबंधी मार्गदर्शन ६५

२ ई. साधक को रैक बनाने के विषय में सूक्ष्म से मार्गदर्शन ७२

२ उ. साधकों को भाव के विषय में मार्गदर्शन ७२

२ ऊ. परात्पर गुरु डॉक्टरजी का 'सनातन प्रभात' के पाठक को सपने में दर्शन देकर उचित जप करनेसंबंधी मार्गदर्शन करना ७४

२ ए. प.पू. डॉ. जयंत आठवलेजी का साधकों को विविध विषय सूक्ष्म से सिखाना ७५

२ ऐ. साधिका की मृत्यु के पश्चात उसकी सूक्ष्म देह को अगले चरण की साधना के विषय में सूक्ष्म से मार्गदर्शन करना ७६

अध्याय ३ : सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की सीख से साधकों को हुए लाभ ७७

३ अ. परात्पर गुरु डॉक्टरजी की सीख के सूत्र साधिका के अंतर्मन पर अंकित होने से, सूत्र उसे उचित समय पर स्मरण होना ७७

३ आ. परात्पर गुरु डॉक्टरजी की सीख साधकों को व्यावहारिक जीवन में उपयोगी होना ७८

३ इ. साधकों से स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन हेतु प्रयत्न होना ८०

* परात्पर गुरु डॉक्टरजी के बताए अनुसार साधिका द्वारा 'सिखाने की प्रवृत्ति' यह अहं का पहलू दूर होने हेतु प्रयत्न करने पर उसका अहं एवं आध्यात्मिक कष्ट न्यून होना ८४

३ ई. साधकों को प्रत्येक परिस्थिति सहर्ष स्वीकारते आना ८६

३ उ. साधकों में गुण-वृद्धि होना ८७

३ ऊ. साधकों से सेवाकार्य भावयुक्त होना ९३

३ ए. साधकों की साधना और सेवा में वृद्धि होना ९४

३ ऐ. परात्पर गुरु डॉक्टरजी का मार्गदर्शन मिलने पर अनिष्ट शक्तियों से अत्यधिक पीडित साधिका को हुए लाभ ९६

३ ओ. परात्पर गुरु डॉक्टरजी की दैवी सीख के फलस्वरूप अल्प काल में अनेक साधकों का उन्नत साधक और सन्त बनना १०३

३ औ. सनातन की सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्त्री श्रीचित्‌शक्ति श्रीमती अंजली गाडगीळजी को सूक्ष्म से प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान १०५

३ औ १. परात्पर गुरु डॉक्टरजी के कृपासमान प्रदत्त आध्यात्मिक शिक्षा से साधकों को हुए लाभ १०५

* पारिवारिक माया त्यागकर, राष्ट्र के प्रति प्रेम उत्पन्न होना १०६

* 'कितने भी संकट आएं, ध्येयप्राप्ति के लिए अडिग रहना है', इतनी तत्त्वस्वरूप परिपक्वता साधकों में आना १०७

३ औ ३. साधकों द्वारा 'साधना' के रूप में अभियान चलाने से उन्हें मिली सफलता से समाज में सकारात्मक परिवर्तन होना व साधकों की भी आध्यात्मिक उन्नति होना १०९

卐 संकलनकर्ताओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ११२

भूमिका

'पारस लोहे को सोना बना सकता है; परन्तु लोहे को सोना बनाने का स्वयं का गुण नहीं दे सकता । इसके विपरीत, गुरु शिष्य पर कृपा कर उसे स्वयं का गुरुत्व ही प्रदान करते हैं । गुरुकृपा होने के लिए निरन्तर गुरु की सीख आचरण में लानी पडती है । महान गुरु सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी की सीख आचरण में लाने के कारण आज तक (१५.५.२०२४ तक) केवल ३३ वर्षों में सनातन के १२८ साधक संत बन चुके हैं तथा १०५८ साधक शीघ्र ही सन्तपद के मार्ग पर अग्रसर हैं ! इससे सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी के गुरुत्व की महानता ध्यान में आती है । ऐसे महान गुरु की सीख कितनी महान होगी !

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी ज्ञान का मेरुपर्वत एवं गुणों का महासागर है ! इसलिए उनकी सीख की ऊंचाई एवं गहराई का अनुमान सहजता से नहीं लगाया जा सकता । वे शब्दों से तो अध्यात्म सिखाते ही हैं; परन्तु उनका नित्य सहज आचरण भी साधना के विविधांगी दृष्टिकोण देनेवाला तथा इतना आदर्श है कि उनके सान्निध्य में आनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को बहुत कुछ सीखने के लिए मिलता है । उनका आचरण देखकर हमें भी पता चलता है कि उचित एवं परिपूर्ण कृति कैसे करनी चाहिए ? हम 'शब्दों से जो सीखते हैं', उसकी अपेक्षा 'कृति से जो सीखते हैं', वह हमारे स्मरण में अधिक रहता है । इस दृष्टि से इस ग्रन्थ में दिए साधकों के अनुभव मौलिक हैं ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी सूक्ष्म आयाम से भी साधकों को विविध ढंग से कैसे सिखाते हैं, यह भी इस ग्रन्थ में दिया है । यह पढकर कैसी भी प्रतिकूल परिस्थिति हो एवं सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी स्थूल रूप से हमारे पास न भी हों, तब भी वे सूक्ष्म रूप से हमारे साथ हैं तथा हमें उचित साधना की दिशा प्रदान करेंगे ही, ऐसी साधकों की श्रद्धा बढने में सहायता होगी ।

साक्षात चैतन्यमूर्ति होने के कारण सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी का सिखाना भी चैतन्य के स्तर पर होता है । इसीलिए उनकी सीख साधकों के अन्तर्मन तक पहुंचती है एवं साधक सहजता से वैसा आचरण करते

हैं । अनेक वर्षों पश्चात भी प्रसंगानुसार साधकों को उस सीख का स्मरण होता है ! उनकी सीख की यह एक अलग ही विशेषता है । उनकी सीख से साधकों को हुए विविध लाभ भी ग्रन्थ में दिए हैं ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी से अनेक लोगों ने अनेक प्रकार से सीखा है तथा सीख भी रहे हैं । कुछ साधकों ने उन्हें सीखने के लिए मिले सूत्र लिखकर दिए हैं । उन सूत्रों के आधार पर यह ग्रन्थ तैयार किया है । अनेक साधक समय-समय पर उन्हें सीखने के लिए मिले सूत्र लिखकर देते ही रहते हैं । इसलिए भविष्य में सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी की सीख के ग्रन्थों के अनेक संस्करण निकलनेवाले हैं ।

'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी की सीख सभी साधक आचरण में लाकर अच्छी साधना कर यदि शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति करें, तो वास्तव में यह ग्रन्थ सार्थक होगा । ऐसा शीघ्र हो, ऐसी श्री गुरुदेवजी के चरणों में मनःपूर्वक प्रार्थना है !' – **(पू.) संदीप आळशी** (६.९.२०२३)

'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की अनमोल सीख : खण्ड १ – साधना प्रत्यक्ष सिखाने की पद्धतियां' ग्रन्थ मानो श्रीमद्भगवद्गीता समान है !

'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की अनमोल सीख : खण्ड १ – साधना प्रत्यक्ष सिखाने की पद्धतियां' ग्रन्थ हाथ में लेकर मुझे लगा कि 'यह 'श्रीमद्भगवद्गीता' है ।' इस ग्रन्थ से प्रचुर मात्रा में चैतन्य प्रक्षेपित होता हुआ प्रतीत हुआ । ग्रन्थ पढते समय वह पढती ही रहूं ऐसा लगा । उसे नीचे रखने का मन ही नहीं कर रहा था ।' इतना वह सुन्दर है ।' – **श्रीसत्शक्ति (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी, सनातन आश्रम, रामनाथी, गोवा.** (१४.६.२०२३)